

जनवरी 2016 मूल्य : 70 ₹

पाखी

सृजन की उड़ान



मन्नू भंडारी
पर केंद्रित

अनुक्रम

संपादकीय/हाशिए पर हर्फ

बगैर दस्तक दरवाजा खुलना : प्रेम भारद्वाज

3

कविता

जिन्हें वह संजोकर रखना चाहती थीं... : सुधा अरोड़ा

7

संवाद

मैं कभी बहुत राजनीतिक नहीं रही : मन्नू भंडारी

8

मूल्यांकन

विरल खामोशी और गांभीर्य : विश्वनाथ त्रिपाठी

14

'महाभोज' जारी है... : वीरेंद्र यादव

17

'महाभोज' में दलित : बलराज पांडेय

19

हठ और नैतिकता के बीच... : रोहिणी अग्रवाल

22

कितने बंटी आजकल : क्षमा शर्मा

29

पितु मातु सहायक स्वामी सखा : अनामिका

32

मुक्ति किसकी : शालिनी माथुर

34

स्त्री का समाज और समाज में स्त्री : अल्पना मिश्र

39

साहित्यिक कृति के पुनर्लेखन की समस्याएं : प्रियम अंकित

44

स्त्री-मुक्ति का यथार्थ : वैभव सिंह

47

'अकेली' के बहाने : राहुल सिंह

50

कला का मानवीय निहितार्थ : आशुतोष

54

जैसा परिवेश वैसी भाषा : उर्मिला शिरीष

58

मानवीय संवेदना की त्रासदी : साधना अग्रवाल

60

खनिज बनने से पहले... : विपिन चौधरी

63

काल्पनिक असुरक्षा के बाहर : उपासना

66

नई कहानी की प्रतिनिधि और निर्णायक कहानी : दीपशिखा

69

ये जो हमारा क्षयग्रस्त जीवन है : आशीष मिश्र

72

आर्थिक स्वतंत्रता और घायल स्त्री-चेतना : ओमप्रकाश मिश्र

75

अब भी नई हैं ये कहानियां : स्मिता वाजपेयी

79

गुफ्तगू

जीवन हर विचारधारा से विशाल है : मन्नू भंडारी

82

किताबों के बहाने

राजनीति के दुरंगेपन का निर्मम आख्यान : रजनी गुप्त

98

एक 'मलाल' यह भी : सौरभ शेखर

100

फैमिली-कोर्ट के लिए अनिवार्य किताब : वेंकटेश कुमार

104

अनुभूतियों का साझा संगम : भारती सिंह

107

बंटी के बहाने जमाने का जखम : आभा दुबे

111

रेपिड फायर

विचार के बिना रचना नहीं : मन्नू भंडारी

113

संस्मरण

मित्रता की आधी सदी : निर्मला जैन

115

इस सादगी के सद्के : सूर्यबाला

118

हिंदी कथा साहित्य की सीधी लकीर : भारत भारद्वाज

121

मन्नू भंडारी वाया राजेंद्र यादव : गीताश्री

123

औरत के कंधों पर : शोभा मिश्र

127

मन्नू भंडारी वाया सुधा अरोड़ा

मेरी डायरी में मन्नू दी

130

कठघरे में...

139

स्त्री संघर्ष का संपूर्ण दस्तावेज

142

कुछ कहानियां कुछ फुटनोट्स

144

चंद सतरें

147

और चंद सतरें...

149

रंगमंच

मन्नू जी के सान्निध्य में : देवेंद्र राज अंकुर

153

हिंदी रंगमंच और 'महाभोज' : पुंज प्रकाश

156

सिनेमा

केवल प्रेम-त्रिकोण नहीं : अमितेश कुमार

159

परिचर्चा

मानवीय अनुभूतियों की सूक्ष्म पड़ताल : नीला प्रसाद

166

एक विरल कथा-शिल्प : मनीषा कुलश्रेष्ठ

167

स्थायी महत्व का साहित्य : प्रभात रंजन

169

'यही सच है' का लेखन : किरण सिंह

170

हिंदी साहित्य की लता मंगेशकर : रचना त्यागी

171

जीवन-वृत्त

173

तस्वीरों में

174



आवरण-सज्जा : जनार्दन कुमार

तस्वीर सौजन्य : सुधा अरोड़ा



“अरुणा : तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, दूसरों से कोई मतलब नहीं, बस चौबीस घंटे अपने रंग और तुलियों में डूबी रहती है। दुनिया में बड़ी से बड़ी घटना घट जाए पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए कोई आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्व नहीं रखती। बस हर घड़ी, हर जगह और हर चीज में से तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है।”

“चित्रा : अरे, इस लगन को देखकर ही तो गुरुजी कहते हैं कि वह समय दूर नहीं, जब हिंदुस्तान के कोने-कोने में मेरी शोहरत गूंज उठेगी। अमृता शेरगिल की तरह मेरा नाम भी गूंज उठे, बस यही तमन्ना है।

अरुणा : कागज पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की बजाय दो-चार की जिंदगी क्यों नहीं बना देती, तेरे पास सामर्थ्य है, साधन हैं।”

ये संवाद मन्नू भंडारी की कहानी ‘दो कलाकार’ के पात्रों के हैं। जो अपने ध्वन्यार्थ में कला और जीवन के अंतर्संबंधों पर एक बहस भी आमंत्रित करते हैं। ‘कला कला के लिए’ और ‘कला जीवन के लिए’ जैसी मान्यताओं से संदर्भित विमर्शों का लंबा इतिहास रहा है। कला की पूरी सफलता उसके मानवीय सरोकारों में रूपांतरित हो जाने में है। ‘दो कलाकार’ कहानी के मार्फत मन्नू भंडारी ने इस बहस को एक रचनात्मक सलामी दी है। हिंदी कथा साहित्य में मन्नू भंडारी की अपनी एक खास और आत्मीय जगह है। जिसका निर्माण उन्होंने अपने रचनात्मक हस्तक्षेप, जीवन और कला के प्रति अपने विशिष्ट दृष्टिकोण तथा सहजता के शिल्प से किया है।

‘दो कलाकार’ कहानी में पारिभाषिक अर्थों में कलाकार केवल चित्र ही है। अरुणा का रास्ता और ध्येय समाज-सेवा से जुड़ा है। अरुणा और चित्रा सहेलियां हैं। हॉस्टल में साथ रहती हैं। चित्रा की पारिवारिक पृष्ठभूमि काफी समृद्ध है। चित्रकला में उसकी लगन और प्रतिभा को देखकर उसके गुरुओं और अभिभावकों को पूरा विश्वास है कि चित्रा के रूप में अमृता शेरगिल का पुनर्जन्म होने वाला है। कोर्स पूरा करते ही चित्रा का विदेश जाना निश्चित है, तो दूसरी ओर

आशुतोष

उसकी प्रिय सखी अरुणा का अपने मंगेतर मनोज से विवाह कर अपने इच्छित रास्ते पर चल पड़ना। दोनों सखियों का जीवन और जगत के प्रति दृष्टिकोण एक दूसरे से अलहदा है। इसे लेकर हमेशा उनमें एक मीठी नोक-झोंक चलती रहती है। जिसकी एक बानगी ऊपर दी गई है। मीठी इसलिए कि वे दोनों एक दूसरे की सखी हैं, एक दूसरे को सबसे बेहतर ढंग से जानती हैं, एक दूसरे का ख्याल रखती हैं। उनके एक दूसरे के बारे में सब जानने में यह भी है कि चाहे कुछ भी हो जाए वे अपना रास्ता नहीं बदल सकतीं। चित्रा लगातार तरह-तरह के चित्रों के सृजन में तो अरुणा कभी हॉस्टल के कर्मचारियों के बच्चों को पढ़ाने, गरीब-असहाय स्त्रियों को साक्षर-सक्षम बनाने तो कभी बाढ़ पीड़ितों की सहायता में लगी रहती है। दोनों साथ रहते हुए, एक दूसरे से स्नेह करते हुए भी एक दूसरे के काम के प्रति आलोचनात्मक नजरिया रखते हैं।

योजना के मुताबिक चित्रा के विदेश जाने का दिन आता है। अरुणा ने भारी मन से चित्रा का सामान आदि तैयार किया। दोपहर बाद चित्रा अपने शिक्षक से मिलने गई और वापस आकर बताती है कि “गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर एक भिखारिन बैठी रहा करती थी ना, लौटी तो देखा कि वह वहीं मरी पड़ी है और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था, उस सारे दृश्य में कि मैं अपने को रोक नहीं सकी, एक रफ-सा स्केच बना ही डाला।”¹²

चित्रा वह स्केच लेकर विदेश चली जाती है। स्टेशन पर उसको विदा करते समय सब थे, पर अरुणा कहीं नहीं थी। वही स्केच बाद में चित्रा की प्रसिद्धि का आधार बनाता है। मरी हुई भिखारिन और उसके मृत देह से लिपटे रोते हुए बच्चों की उस पेंटिंग ने चित्रा को विश्व के नामी चित्रकारों की श्रेणी में खड़ा कर दिया।

इस घटना के वर्षों बाद चित्रा के चित्रों की एक प्रदर्शनी भारत में लगती है। जिसमें उसकी कला को चतुर्दिक प्रशंसा मिलती है। उसी प्रदर्शनी में उसकी भेंट अरुणा से होती है। अरुणा के साथ दो बच्चे हैं, लड़का दस साल का और लड़की आठ साल की। चित्रा उससे उन बच्चों के बारे में पूछती है अरुणा उनको बताती है कि ये बच्चे मेरे हैं, चित्रा को विश्वास नहीं होता। बच्चे भी अपनी मासी से घुल-मिलकर बात करते हैं। अरुणा के बच्चे चित्रा से उस बच्चों वाली पेंटिंग के बारे में कई सवाल करते हैं। बच्चों के बारे में चित्रा की उत्सुकता बढ़ती जा रही है। वह बार-बार अरुणा से पूछती है कि ये बच्चे किसके हैं। अरुणा चित्रा को उस पेंटिंग के पास ले जाती है और भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर अंगुली रखकर बोली, ‘ये ही वे दोनों बच्चे हैं।’

किसी भी कलारूप की सार्थकता सौंदर्य की उपलब्धि में

है। कलाजनित सौंदर्य को परिभाषित करते हुए निकोलाई गाब्रिलोविच चेर्नोशेव्स्की ने कहा है कि “मानव के लिए सुंदर वही वस्तु है जिसमें वह जीवन को, जिस रूप में कि वह उसे समझता है, देखता है। सुंदर वह वस्तु होती है जो उसे जीवन की याद दिलाती है।”¹³ सौंदर्य के बारे में चेर्नोशेव्स्की के इस निष्कर्ष कि ‘सुंदर वह वस्तु होती है जो उसे (मानव को) जीवन की याद दिलाती है’, के आधार पर चित्रा के ‘अनाथ’ शीर्षक वाले विश्वप्रसिद्ध पेंटिंग में चित्रित बच्चों को देखकर अरुणा के पालित बच्चों का चित्रा से संवाद देखिए :

“लड़की : ये बच्चे रो क्यों रहें हैं मासी?

लड़का : इनकी मां मर गई, देखती नहीं मरी पड़ी है।

लड़की : ये सचमुच के बच्चे थे मासी?

चित्रा : अरे क्या सचमुच के बच्चों को देखकर ही तो बनाई थी यह तस्वीर।

लड़का : हाय राम! इनकी मां मर गई तो फिर इन बच्चों का क्या हुआ?

लड़की : मासी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी तस्वीरें दिखाओ।”¹⁴

इस संवाद के बाद मन्नू भंडारी ने टिप्पणी की है कि “उस तस्वीर को देर तक देखना बच्ची के लिए असह्य हो उठा था।” असह्य इसलिए की उस तस्वीर का तथाकथित बहुचर्चित सौंदर्य बच्ची को जीवन की याद नहीं दिलाता। चित्रा से बच्ची का यह पूछना कि ‘क्या ये सचमुच के बच्चे थे?’ आधुनिक कला की विश्वसनीयता को प्रश्नांकित करता है। दूसरे यह कि चित्रा की वह पेंटिंग उन्हीं बच्चों की है, लेकिन वे बच्चे कला में व्यंजित खुद को नहीं पहचान पाते। बच्चों का चित्रा की उस पेंटिंग को नहीं समझ पाना चित्रकला ही नहीं समस्त कलारूपों की संप्रेषणीयता पर एक आवश्यक टिप्पणी है। जिसके लिए लिखा जा रहा है, जिसका जीवन कला में दर्ज किया जा रहा है, क्या वह व्यक्ति-समाज उसको समझ पा रहा है? अगर नहीं तो फिर यह सारी का सारी कलात्मक निर्मितियां किस काम की हैं? यह जितना साहित्य के लिए सच है, उतना ही अन्य कलाओं के लिए भी। यह एक महत्वपूर्ण सवाल है जिसको यहां मन्नू भंडारी ने उठाया है। बच्चे ही नहीं बड़े भी जीवन की इस आभासी एवं किताबी दृष्टिकोण की प्रतीकात्मक व्यंजना को नहीं समझ पा रहे हैं। अरुणा भी चित्रा के प्रतीकात्मक चित्रों को ‘डिकोड’ नहीं कर पाती। वह उनको चित्रा की बेवकूफी का प्रतीक बताते हुए कहती है कि “अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं, मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है।”¹⁵ चित्रा के चित्र जिनके बारे में हैं वही नहीं समझ पाते हैं, कला-मर्मज्ञ समझेंगे तो समझा करें।

चित्रा के प्रतीकात्मक चित्रों को अरुणा उसके ‘दिमाग के

कन्ययूजन का प्रतीक' कहती है। इस संदर्भ में मधुरेश कहते हैं कि "जीवन में कर्म के प्रति चित्रा की तरह उदासीन रहने वाले लोग ही वस्तुतः रचना में कलावाद का सहारा लेते हैं। चित्रा के चित्र 'कन्ययूजन' में अमूर्तता और प्रतीक-बाहुल्य को लेकर अरुणा की टिप्पणी प्रकारांतर से नई कहानी में घुसपैठ करती प्रतीक-बहुलता और कलावाद के विरोध में की गई टिप्पणी ही लगती है।"⁶ संभव है कि 'दो कलाकार' कहानी के सादे शिल्प का रहस्य भी यही हो। मन्नू भंडारी की इस कहानी पर चंचल चौहान का कहना है, "यह कहानी अर्थों के कई आयाम समेटे हुए है। ये आयाम सौंदर्यशास्त्रीय और सामाजिक अर्थवत्ता के भी हो सकते हैं।" जाहिर है कि मन्नू भंडारी ने 'दो कलाकार' कहानी में कलाकार के अर्थ का विस्तार तो किया ही है, साथ ही कला के सामाजिक आधारों की खोज भी की है। कला की सामाजिक भूमि यही है कि उसकी पहुंच समाज के प्रत्येक तबके तक हो। इसका निर्धारण कलाकार की सृजन-प्रक्रिया के उद्देश्यों पर आश्रित होता है। केवल अपने क्षणिक गौरव के लिए नहीं, वरन् अपने देश के अनंत गौरव और समस्त मानवता के कल्याण के लिए कार्यरत रहना, इनसे अधिक श्रेष्ठ और महान कार्य कुछ नहीं हो सकता। जबकि चित्रा के लिए कला का उद्देश्य अमृता शेरगिल जैसी लोकप्रियता प्राप्त करना ही है। चेर्नीशेव्स्की कहते हैं कि "पूर्णता यही प्रकृति तथा जीवित मानव में नहीं, तो कला और मानव की कृतियों में उसकी टोह करना बहुत दूर की चीज है। जो कर्ता (मानव) में नहीं है, वह उसकी कृति में कैसे हो सकता है।"⁸ चित्रा के साथ यही समस्या है। वह भी पूर्णता की तलाश प्रकृति या जीवित मानव में नहीं करती, इसलिए पूर्णता का वह रूप उसकी कला में भी नहीं मिलता। वह अपने कलागत सत्य को बुद्धि से खोजती है। जबकि सत्य बुद्धि की उपज नहीं है। वह जीवन की, वास्तविकता की देन होता है। अरुणा ने अपनी पूर्णता की खोज में बुद्धि-सत्य नहीं हृदय-सत्य का आधार लिया है। इसीलिए उसकी कला भिखारिन के अनाथ बच्चों का उजियार होता जीवन है। अरुणा चित्रा से बड़ी कलाकार है। चित्रा की कला में कल्पना-तत्त्व का प्रधान्य है, और अरुणा की कला में वास्तविकता। हमें यह बात स्वीकार करने में कोई गुरेज नहीं होनी चाहिए कि कल्पना के विरुद्ध वास्तविकता बड़ी है और यह कि जीवित वास्तविकता की तुलना में कला की कृतियां नहीं ठहर सकतीं। अपनी संपूर्ण कलात्मक पूर्णता के बावजूद कला का स्थान वास्तविक जीवन से नीचे ही होता है। कला का मूल कार्य जीवन में मानव की दिलचस्पी की हर चीज को पुनः मूर्त करना है। 'दो कलाकार' कहानी की अरुणा यही करती है। "कला प्रारब्ध के विरुद्ध मनुष्य का विद्रोह है। कला के इतिहास में जितनी भी शैलियां और प्रवृत्तियां मिलती हैं, सब की सब इस

विद्रोह को विभिन्न दृष्टियों से आकलित किया है और इनकी ही विभिन्न अवधारणाएं महान शैलियों के रूप में संघटित हुई हैं।"⁹ भिखारिन के मृत्यु की बाद उसके अनाथ हो गए बच्चों का जीवन परिवर्तित कर अरुणा प्रारब्ध के विरुद्ध विद्रोह करती है और उसमें सफल होती है। अरुणा की सफलता इसमें भी है कि उसके रास्ते के प्रति हमेशा आलोचनात्मक रुख रखने वाली चित्रा अरुणा की कलात्मक निर्मिति को देखकर निःशब्द हो जाती है। जीवन, कला और नजरिए को लेकर दोनों में चलने वाला विवाद उस दिन खत्म हो गया था। सिद्धांत के क्षेत्र में विवाद से जो नहीं सुलझ पाता, वास्तविक जीवन में व्यवहार उसे सुलझा देता है।

'दो कलाकार' कहानी में मन्नू भंडारी की एक और खास बात की ओर ध्यान जाता है। वह है अरुणा के पति मनोज की भूमिका। मनोज और अरुणा के सरोकार एक से हैं। विवाह पूर्व अरुणा और मनोज के बीच खतो-किताबत का मजमून भी चित्रा के शब्दों में 'बड़े-बड़े आदर्शों की बातें,' हुआ करते थे। इसीलिए समाज-सेवा के सवाल पर चित्रा अरुणा से कहती है कि "यह काम तो तेरे और मनोज के लिए छोड़ दिया है। तुम दोनों ब्याह कर लो और फिर जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।"¹⁰ विवाह के पहले अरुणा की रुचि और सरोकारों से इतफाक रखने वाला मनोज विवाह के बाद भी अरुणा के मकसदों में बराबर का साझीदार बना रहता है। जबकि ऐसे मामलों में स्त्रियां अक्सर छली जाती हैं। स्वयं मन्नू भंडारी जी के जीवन का भी 'यही सच है' और उनके प्रति राजेंद्र यादव जी के बर्ताव की 'एक कहानी यह भी' है। प्रेमी और पति के चरित्र का एक बुनियादी पार्थक्य यह है कि प्रेमी पति बनते ही सबसे पहले अपने 'प्रेमीपन' से मुक्ति पा लेता है। लेकिन मन्नू भंडारी का 'मनोज' पति नामक संस्था में प्रेमियों के वादे और विश्वास की रक्षा कर उसे पतित होने से बचा लेता है। एक कलाकार अपने इच्छित को जो उसके जीवन में हासिल नहीं है, उसे अपनी कलाकृति में संभव करता है। 'दो कलाकार' कहानी में संक्षिप्त ही सही पर स्त्री के जीवन में पुरुष की इतनी ईमानदार उपस्थिति दिखाकर मन्नू भंडारी ने पुरुष के नाम पर 'चीत्कार-फुत्कार' वाले हिंदी के स्त्री-विमर्श की एक सर्वथा नई दिशा की ओर संकेत किया है। यह संकेत ही है, क्योंकि कहानी की मांग के मुताबिक यह प्रकरण बहुत संक्षिप्त है।

कहानी का यह अंत चौंकाने वाला है। चित्रा जैसी प्रसिद्ध कलाकार की भी आंखें तो फैली रह गई और शब्द उसके विचारों में खो गए। 'दो कलाकार' कहानी का यह अंत 'ओ हेनरी' की कहानियों का याद दिलाता है। 'ओ हेनरी' की एक कहानी 'द लॉस्ट लीफ' भी एक कलाकार की सृजन-प्रक्रिया और कला के मानवीय और सामाजिक आयामों से संदर्भित है।

कहानी के अंत में 'द लॉस्ट लीफ' का कलाकार बूढ़ा बेहरमैन की आखिरी और सर्वोत्तम कलाकृति वह पत्ती ही नहीं जिसे बचा हुआ हुआ देख जॉन्सी के भीतर जीने की इच्छा बलवती होती है, बल्कि जॉन्सी का बचा हुआ जीवन और उसको बचाने की जिद में खत्म हो गया बेहरमैन का जीवन भी कलाकृति है। जब एक का जीवन सबके जीवन से संवेदनात्मक समरसता प्राप्त कर लेता है तो वह कला बन जाता है और जब कला मानवीय सरोकारों से स्पर्दित होने लगती है तो वह जीवन बन जाता है। कला और जीवन का अपनी चरम परिणति में एक दूसरे के पर्याय बन जाना ही इन दोनों की सार्थकता है।

'दो कलाकार' कहानी दरअसल दो नहीं तीन कलाकारों की कहानी है। मुख्यतः तीनों कलाकारों की कला-विषयक मान्यताओं की कहानी है। एक है 'चित्रा' जो मृत भिखारिन मां के शरीर से लिपटकर रो रहे अबोध बच्चों का चित्र बनाती है और प्रसिद्ध होती है। दूसरी है 'अरुणा' जो भिखारिन के बच्चों को अपने घर ले आती है। उन बच्चों को उनके अतीत के अंधेरे से निकालकर स्नेह, सम्मान और गरिमा के उजाले में पालती है, और तीसरी कलाकार हैं स्वयं 'मन्नू भंडारी' जो उपरोक्त दोनों कलाकारों की कलाकृतियों को एक दूसरे के बरअक्स रखकर, उन कलाकृतियों के निर्माण-प्रक्रिया पर 'दो कलाकार' कहानी लिखती हैं। चित्रा जैसी मशहूर और 'सिद्ध' कलाकार के बरअक्स अरुणा की पहचान श्रेष्ठ कलाकार के रूप में कर कला के प्रति अपना पक्ष स्पष्ट करती हैं। चित्रा की कला जीवन की अनुकृति है। अरुणा की कला स्वयं जीवन

ही है और मन्नू भंडारी की कला 'कला कला के लिए' के विरुद्ध कला के जीवनधर्मा स्वरों की पहचान करने में है। मन्नू भंडारी द्वारा 'दो कलाकार' कहानी के आलोचनात्मक यथार्थवाद के तहत विकसित कला की यह एक नई शैली ही नहीं कला और जीवन के रागात्मक रिश्ते की एक महान अवधारणा भी है।



संदर्भ :

1. भंडारी मन्नू, दो कलाकार
2. भंडारी मन्नू, दो कलाकार
3. चेर्नोशेवकी निकोलाई गाब्रिलोविच चेर्नोशेवकी दर्शन साहित्य और आलोचना, अनुवाद-नरोत्तम नागर, परिकल्पना प्रकाशन, लखनऊ, 2002, पृ. 173
4. भंडारी मन्नू, दो कलाकार
5. भंडारी मन्नू, दो कलाकार
6. मधुरेश, नारीवाद का अघोषित दस्तावेज, मन्नू भंडारी : सृजन के शिखर, संपा. सुधा अरोड़ा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 205
7. चौहान चंचल, मन्नू भंडारी की कहानी-यात्रा, मन्नू भंडारी : सृजन के शिखर, संपा. सुधा अरोड़ा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 225
8. चेर्नोशेवकी निकोलाई गाब्रिलोविच चेर्नोशेवकी दर्शन साहित्य और आलोचना, अनुवाद-नरोत्तम नागर, परिकल्पना प्रकाशन, लखनऊ, 2002, पृ. 171
9. Malraux Andre, 'The Voices of Silence' (मॉरिस वेज, प्राब्लम्स इन एस्थेटिक, न्यूयार्क, 1959, पृष्ठ : 260)
10. भंडारी मन्नू, दो कलाकार



मो. : 9479398591

कथा साहित्य के क्षेत्र में मन्नू भंडारी ने कई तरह के आंतरिक प्रयोग किए हैं। लेकिन इन प्रयोगों में मतवादी पूर्वाग्रह नहीं हैं। सामाजिक समस्याओं को मन्नू भंडारी आधुनिक मनोविश्लेषण-शास्त्र की तर्कों में बैठकर उद्घाटित करती हैं। 'आपका बंटी' की प्रसिद्धि का कारण बाल-मनोविज्ञान की आंतरिक समझ और पूरे परिवेश के सर्जनात्मक तनाव की अभिव्यक्ति है। मन्नू भंडारी के अन्य उपन्यासों में 'महाभोज', 'एक इंच मुस्कान', 'स्वामी' प्रसिद्ध हुए हैं और कहानियों में 'एक प्लेट सैलाब', 'यही सच है', 'त्रिशंकु' आदि। उपन्यास हों या कहानी मन्नू भंडारी आलंकारिक, चमत्कारिक शिल्प का प्रयोग नहीं करतीं। वर्तमान जीवन की विसंगतियों और समस्याओं को वह प्रकृत भाव-भूमि से उठाती हैं और उनका सामाजिक यथार्थ इस ढंग से रचनाओं में व्यक्त होता है कि पाठकीय संवेदनाओं को दीप्त कर देता है।

-बच्चन सिंह